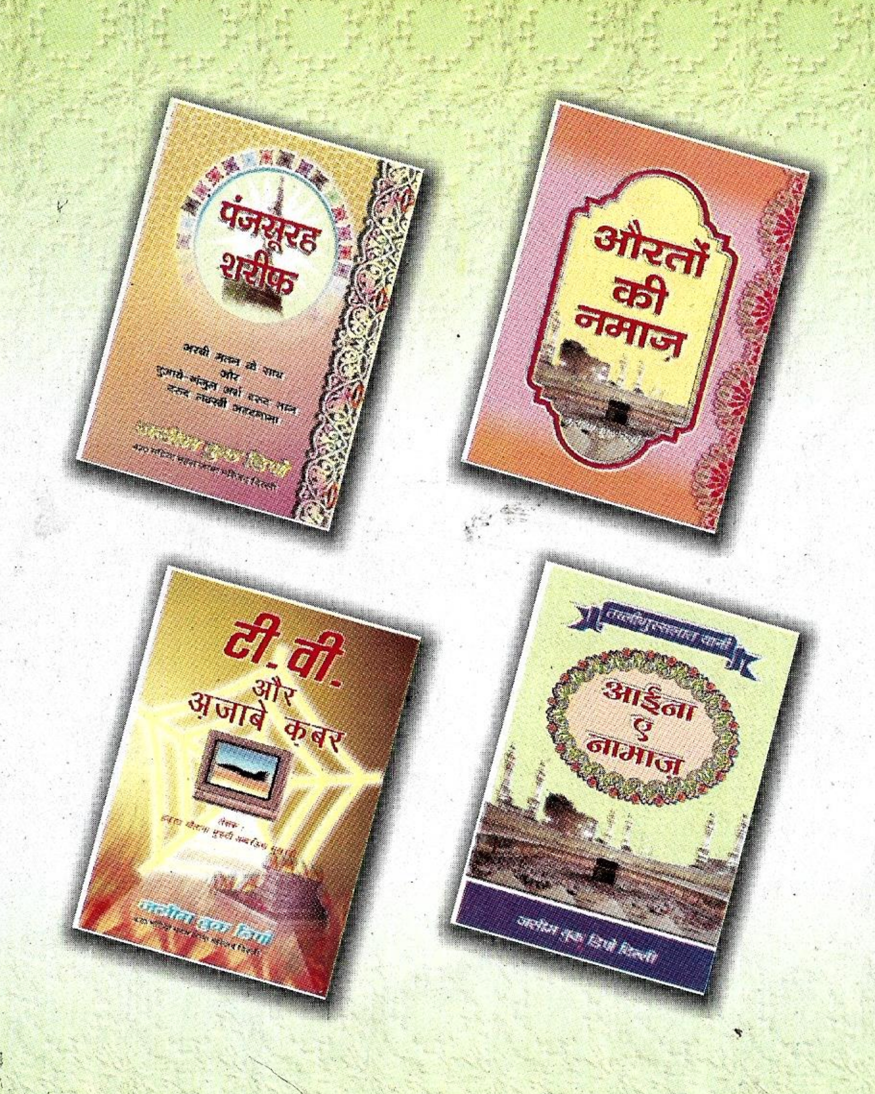






Rs.18.00

# नियत नामा

## मुसलमानों के लिए ज़रूरी बातें

सहित :

☞ मुफ़ीदुस्सलात ☞ ईमान नामा

जसीम बुक डिपो प्रा.लि.
401, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली

क़द अफ़्लहल् मुअ्मिनून. अल्लज़ीन
हुम फ़ी सलातिहिम ख़ाशिऊन.

बेशक कामियाबी को पहुंच गये वे लोग जो
अपनी नमाज़ को डर कर पढ़ने वाले हैं

# ज़रुरतुल मुस्लिमीन

मुसलमानों के लिए

## ज़रूरी बातें

सहितः
- मुफ़ीदुस्सलात
- ईमान नामा

अनुवादक :
अहमद जलीस नदवी एम० ए०

जसीम बुक डिपो प्राईवेट लिमिटेड
401, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

सर्वाधिकर प्रकाशकाधीन

अनुवादक : अहमद जलीस नदवी (एम० ए०)



بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

## पहला कलमा तय्यब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰهِ ؕ

लाइला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह०

नहीं है कोई इबादत के लायक अलावा खुदा के मुहम्मद सल्ल० भेजे हुए खुदा के हैं।

## दुसरा कलमा शहादत

اَشۡهَدُ اَنۡ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَاَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ ؕ

अशहदुअल्लाइला ह इल्लल्लाहु वह दहू ला शरी क लहू व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू०

मैं गवाही देता हूं कि नहीं है कोई माबूद खुदा के अलावा एक है वह, उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्ल०) उसं के बंदे और उसके रसूल हैं।

## तीसरा कलमा तम्जीद

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ
اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व लाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरू वला हौल वला .कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीमि०

अल्लाह पाक है और सब तारीफ़ अल्लाह के लिये है और कोई इबादत के लायक़ नहीं है, अ़लावा ख़ुदा के और अल्लाह सबसे बड़ा है और ताक़त और .कुव्वत नहीं है मगर बुलन्द व बु.ज़ुर्ग ख़ुदा की तौफ़ीक़ से।

## चौथा कलमा तौहीद

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ
الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ
بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला–इलाह इल्लल्लाहु वह दहू लाशरीक लहू लहुल् मुल्कु व लहुल् हम्दु युहयी व युमीतु बियदिहिल ख़ैरू व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर।

नहीं है कोई इबादत के लायक़, ख़ुदा के अ़लावा, वह एक है, उसका कोई शरीक नहीं, उसी का सब मुल्क है, और उसी के लिये सब तारीफ़ है, वह ही जिलाता है और मारता है, अच्छाई और बरकत उसी के हाथ में है और वह हर चीज़ पर .क़ुदरत रखता है।

★



## पाँचवां कल्मा इस्तिग़्फ़ार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّيْ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ اَذْنَبْتُهٗ عَمَدًا اَوْ
خَطَأً سِرًّا اَوْ عَلَانِيَةً وَّاَتُوْبُ اِلَيْهِ مِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ
اَعْلَمُ وَمِنَ الذَّنْبِ الَّذِيْ لَآ اَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ وَسَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَغَفَّارُ الذُّنُوْبِ وَلَا حَوْلَ
وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ۝

अस्तग़्फ़िरुल्लाह रब्बी मिन कुल्लि ज़म्बिन अज़नब्तुहू अ़मदन औ ख़तअन सिर्रन औ अ़लानियतंव्व अतूबु इलैहि मिनज़्ज़ म्बिल्लज़ी अअ़्लमु व मिनज़्ज़म्बिल्ल ज़ी ला अअ़्लमु इन्नक अन्त अ़ल्लामुल .ग़ुयूबि व सत्तारूल उ़यूबि व ग़फ़्फ़ारुज़्ज़ुनूबि वला हौल वला .कुव्वत इल्ला बिल्ला हिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीमि।

**तर्जुमा**

मैं अल्लाह से मआ़फ़ी मांगता हूं जो मेरा परवरदिगार है, हर गुनाह से, जो मैं ने जानबूझ कर किया या भूल कर किया या छुपकर किया या ज़ाहिर होकर किया और में उसकी बारगाह में तौबा करता हूं उस गुनाह से जिसको मैं जानता हूं, और उस गुनाह से भी जिसको मैं नहीं जानता, (ऐ अल्लाह!) बेशक तू ग़ैबों का जानने वाला और ऐबों का छुपाने वाला और गुनाहों को बख़्शने वाला है, गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की .कुव्वत नहीं मगर अल्लाह की मदद से जो बहुत बुलन्द अ़ज़मत वाला है।

★

## छटा कलमा रेद्दे कुफ़्र

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا
وَّاَنَا اَعْلَمُ بِهٖ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَآ اَعْلَمُ بِهٖ
تُبْتُ عَنْهُ وَتَبَرَّاْتُ مِنَ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ
وَالْمَعَاصِیْ كُلِّهَا اَسْلَمْتُ وَاٰمَنْتُ
وَاَقُوْلُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बि क मिन अन उश्रि क बि क शैअंव्व अना अअ़् लमु बिही व अस्तग़्फ़िरू क लिमा ला अअ़् लमु बिही तुब्तु अ़नहु व तबर्रअ्तु मिनलकुफ़्रि वशिशर्कि वल् मआसी कुल्लिहा अस्लम्तु व आमन्तु व अ.कूलु ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्र सूलुल्लाहि०

ऐ अल्लाह ! बेशक मैं पनाह मांगता हूं तुझसे इससे कि शरीक करूं तेरे साथ किसी चीज़ को, जिसे मैं जानता हूं। और मैं तुझसे उसके लिए मग़्फ़िरत चाहता हूं, जिसे मैं नहीं जानता हूं, मैंने उस से तौबा की और कुफ़्र और शिर्क और तमाम गुनाहों से बाज़ आया। मैं ने इस्लाम .कुबूल किया, ईमान ले आया और मैं कहता हूं कि ख़ुदा के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं,मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल हैं।

## ईमाने मुज्मल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ كَمَا هُوَ بِاَسْمَآئِهٖ وَ



صِفَاتِهٖ وَقَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ

आमन्तु बिल्लाहि कमा हुव बिअसमाइही व सिफ़ातिही व क़बिल्तु जमिअ़ अहकामिही०

मैं ईमान लाया ख़ुदा पर जैसा कि वह अपने नामों से और सिफ़तो (गुणों) से भरपूर है और मैंने .कुबूल किया उसके तमाम हुक्मों को।

## ईमाने मुफ़स्सल

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ
مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ

आमन्तु बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतु बिही व रुसुलिही वल्यौमिल् आख़िरि वल् क़द्रि ख़ैरिही व शर्रिही मिनल्लाहि तआ़ला वल्बअ़् सि बअ़् दल् मौति०

मैं ईमान लाया ख़ुदा पर और उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर उस के रसूलों पर और आख़िरत के दिन पर और इस बात पर कि जो अन्दाज़ा नेकी और बुराई का है, अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है और मरने के बाद सब के उठने पर।

## वुज़ू की नियत

اَتَوَضَّأُ لِرَفْعِ الْحَدَثِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ
الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ

الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْاِسْلَامِ ؕ

अ तवज़्ज़उ लिरफ़्अ़िल ह दसि अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीमि० बिस्मिल्लाहिर्र हमानिर्रहीम० बिस्मिल्लाहिल् अज़ीमि वल्हम्दु लिल्लाहि अ़ला दीनिल् इस्लामि०

मैं वज़ू करता हूं नापाकी दूर करने के लिए। पनाह मांगता हूँ अल्लाह की रद्द किये गये शैतान से। शुरू करता हूं अल्लाह के नाम के साथ जो मेहरबान और रहीम है। शुरू करता हूं मैं ख़ुदा–ए–बुज़ुर्ग के नाम से और तारीफ़ ख़ुदा के लिये है दीने इस्लाम पर।

## ग़ुस्ल की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اَغْتَسِلَ مِنْ غُسْلِ الْجَنَابَةِ لِرَفْعِ الْحَدَثِ ؕ

(1)नवैतु अन अग़ तसिल मिन .ग़ुस्लिल् जनाबति लिरफ़अ़िल हदसि० मैं नीयत करता हूं कि पाकी हासिल करूं .ग़ुस्ले जनाबत (नपाकी) से नापाकी के दूर होने के लिए।

## तयम्मुम की नीयत

اَتَيَمَّمُ لِرَفْعِ الْحَدَثِ ؕ

१. ध्यान में रहे कि यह नीयत तमाम क़िस्म के .ग़ुस्लों के लिये काफ़ी है। .ग़ुस्ल करने वाले को चाहिये कि जिस क़िस्म का .ग़ुस्ल हो, उसका नाम ले, जैसे अगर एह्तिलाम (स्वप्न दोष) का .ग़ुस्ल हो तो इस तरह कहे 'अग़्तसिलु मिन .ग़ुस्लिल एह्तिलामि लिरफ़अ़िल ह दसि० और .ग़ुस्ल करने वाले को चाहिये कि .ग़ुस्ल के शुरू में कहे कि .ग़ुस्ल करता हूं मैं नापाकी दूर करने के लिये और पूरे जिस्म पर सिर से पांव तक पानी बहाये, इस तरह कि सब जगह पानी पहुंच जाये। अगर बाल बराबर भी कहीं सुखा रहेगा तो .ग़ुस्ल ठीक न होगा।



अतयम्ममु लिरफ़् अ़िल ह दसि०
तयम्मुम करता हुं नापाकी दूर करने के लिए।

## नीयत बांधने से पहले की दुआ

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ ؕ

इन्नी वज्जह् तु वज्हिय लिल्लज़ी फ त रस्समावाति वल् अर्ज़ हनीफ़व्वं मा अना मिनल् मुश्रिकीन०

बेशक मैं ने मुंह को फेरा उस ज़ात की तरफ़ जिसने पैदा किया आसमान और ज़मीन को दिल के खुलूस से और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं।

## नीयत बांधने के बाद की दुआ

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ ؕ

सुब्हान कल्लाहुम्म व बिहम्दिक व त बारकस्मुक व तआला जद्दुक व ला इलाह ग़ैरुक०

ऐ अल्लाह! तु पाक है तीरी हम्द (तारीफ़) के साथ (शुरू करता हू) और तेरा नाम बरकत वाला है। और तेरी बु.ज़ुर्गी बुलन्द है, और तेरे सिवा कोई माबुद नहीं।

★

## रुकूअ़ की तस्बीह

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيْمِ

सुब्हान रब्बियल अज़ीम०
मेरा रब पाक है, जो बुज़ूर्ग है।
इसको रुकुअ़ में तीन बार पढ़े।

## तस्मीअ़

(इसको रूकूअ़ के बाद पढ़े)

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह०
खुदा ने .कुबूल किया उस की दुआ को, जिसने सराहा उसको।

## तम्हीद

(इसको तस्मीअ़ के बाद पढ़े)

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ

अल्लाहुम्म रब्बना व लकल्हम्द०
ऐ अल्लाह, हमारे पालनहार, और तेरे ही लिए सब तारीफ़ है।

★



## सज्दे की तस्बीह

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى

सुब्हान रब्बीयल अअ़्ला
मेरा पालनहार पाक है, जो सब से बुलंद है।

## तशह् हुद

इस को नमाज़ में (क़अ़्दे में) बैठकर पढ़े।

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ
عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ
عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا
اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ

अत्तहिय्यातु[1] लिल्लाहि वस्स ल वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब र कातु हू अस्सलामु[2] अ़लैना व अ़ला अ़िबादिल्लाहिस्सालिहीन अशहदु[3] अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू०

१. मेराज की रात अल्लाह तअ़ला के हुज़ूर मे नबी सल्ल० ने ये तीन कलमें कहे, तो उसके जवाब में अल्लाह तआ़ला ने इस के बाद वाले तीन कलमें फ़रमायें।
२. नबी सल्ल० ने अल्लाह का जब बड़ा करम देखा तो अपने साथ दूसरों के वास्ते भी सलामती चाही।
३. अल्लाह और उसके प्रिय के दर्मियान जब फरिश्तों ने यह मामला देखा तब यह गवाही दी।

तमाम इबादतें क़ौली, बदनी, और माली अल्लाह के लिए हैं। सलामती हो तुझ पर ऐ नबी सल्ल० और अल्लाह की रहमत और बरकतें। सलामती हो हम पर और ख़ुदा के बंदों पर, जो नेक हैं। गवाही देता हूं कि नही है कोई इबादत के लायक़ और गवाही देता हूं मै कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बंदे और उसके रसूल हैं।

## इसके बाद दरूदे इब्राहीम पढ़े

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ
بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद० अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मदिंव्व अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद०

ऐ अल्लाह! दरूद भेज मुहम्मद (सल्ल०) पर और मुहम्मद सल्ल० की आल (औलाद) पर जैसा कि दरूद भेजा तूने इब्राहीम अ़लै० पर और इब्राहीम अ़लै० की आल पर बेशक तू सराहा हुआ बु.जुर्ग है। ऐ अल्लाह! बरकत भेज मुहम्मद सल्ल० पर और मुहम्मद सल्ल० की आल पर जैसा की बरकत भेजी तूने इब्राहीम अ़लै० पर और इब्राहीम अ़लै० की आल पर। बेशक तू सराहा हुआ बु.जुर्ग है।

★



## इसके बाद यह दुआ़ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِاُسْتَاذِيْ وَلِجَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

अल्लाहुम्मग़्फ़िरली व लिवालि दय्य व लि उस्ताज़ी व लि जमीअ़िल् मुअ्मिनीन वल् मुअ्मिनाति वल् मुस्लिमीन वल् मुस्लिमाति बिरह्मतिक या अर्हमर्राहिमीन०

ऐ अल्लाह! बख़्श दे मुझको और मेरे माँ–बाप को और मेरे उस्ताद को और तमाम ईमान वाले मर्दो को और ईमान वाली औरतों को और तमाम मुसलमान मर्दो को और मुसलमान औरतों को अपनी रह्मत से ऐ सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले।

## .ज़ुहर, मग़्रिब और इशा के फ़र्ज़ों के बाद की दुआ़

رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह स नतंव्व फ़िल आख़िरति ह स नतंव्व क़िना अ़ज़ाबन्नार०

ऐ हमारे पालनहार! तू हमको दुनिया में बेहतरी और आख़िरत में बेहतर चीज़ दे और तू हम को दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा।

## फ़ज्र और अ़स्र के फ़र्ज़ों के बाद की दुआ़

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْئَلُكَ اِيْمَانًا مُّسْتَقِيْمًا وَّفَضْلًا دَآئِمًا
وَّنَظَرًا رَّحْمَةً وَّعِلْمًا نَّافِعًا وَّعَقْلًا كَامِلًا وَّقَلْبًا مُّنَوَّرًا
وَّتَوْفِيْقًا اِحْسَانًا وَّتَوْبَةً نَّصُوْحًا وَّصَبْرًا جَمِيْلًا وَّ
اَجْرًا عَظِيْمًا وَّلِسَانًا ذَاكِرًا وَّبَدَنًا صَابِرًا وَّرِزْقًا
وَّاسِعًا وَّسَعْيًا مَّشْكُوْرًا وَّذَنْبًا مَّغْفُوْرًا وَّعَمَلًا مَّقْبُوْلًا
وَّدُعَآءً مُّسْتَجَابًا وَّجَنَّةَ الْفِرْدَوْسِ نَعِيْمًا بِرَحْمَتِكَ
يَآ اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ
خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ
سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ وَسَلٰمٌ عَلَى
الْمُرْسَلِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

अल्लाहुम्म इन्ना नसअलुक ईमानम मुस्तक़ीमंव्व फ़ज़्लन दाईमंव्व नज़रर्रहमतंव्व अ़िल्मन नफ़िअंव्व अ़क़्लंन कामिलंव्व क़ल्बम मुनव्वरंव्व तौफ़िक़न इहसानंव्व तौबतन नसूहंव्व सबरन जमीलंव्व अज्रन अ़ज़ीमंव्व लिसानन ज़ाकिरंव्व ब द नन साबिरंव्व रिज़ क़ंव्वासिअंव्व सअ़ यम मश्कूरंव्व ज़म्बम् मग़फ़ूरंव्व अ़ म लम मक़्बूलंव्व दुआअम मुस्तजाबंव्व जन्नतल फ़िर्दोसि



नअ़ीमम् बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन० व सल्लल्लाहु तआ़ला अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही सय्यिदिना मुहम्मदिंव्व अ़ला आलिही व अस्हाबिही अज्मअ़ीन० सुब्हान रब्बिक रब्बिल् अ़िज़्ज़ति अम्मा–यसिफून व सलामुन अ़लल् मुर्सलीन वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आ़लमीन०

ऐं अल्लाह ! बेशक हम मांगते हैं तुझ से सिधा ईमान हमेशा रहने वाली मेहरबानी, रहमत की नज़र, फ़ायदा देने वाला इल्म, पूरी अ़क़्ल, रौशन दिल, नेक तौफ़ीक़, .क़ुबूल की गई तौबा, बेहतर सब्र, बड़ा बदला, ख़ुदा को याद करने वाली ज़बान, सब्र करने वाला बदन, कुशादा रोज़ी, क़ामियाब कोशिश, माफ़ी किये जाने वाला गुनाह, .क़ुबूल किये गए अ़मल, .क़ुबूल की गई दुआ, और नेमत की जगह फ़िर्दोस की जन्नत, तेरी रहमत से, ऐ सब से बड़े रहम करने वाले ! और दरूद भेजे अल्लाह अपनी बेहतरीन खल्क़ (बनावट) वाले, हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर और उनकी आल पर और उन के तमाम साथियों पर। पाक है तेरा पालनहार कि इ़ज़्ज़त वाला है उस से जो वे सराहते हैं और सलाम तमाम भेजे हुओं पर और सब तारीफ़ .ख़ुदा के लिये है जो सब दुनिया वालों का पालनहार है।

## सुबह की सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى
سُنَّةَ الْفَجْرِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला रकअ़ तैनि सुन्नत रसूलिल्लाहि तआ़ला सुन्नतल्फ़ज्रि मुत वज्जिहन इला जिहतिल कअ़् बतिश्श रीफ़ति अल्लाहु अकबर०

नीयत करता हू नमाज़ पढ़ने की, वास्ते अल्लाह तआ़ला के दो रकअ़त सुन्नत, रसूलुल्लाह की सुन्नत, वक़्त फ़ज्र, मुंह तरफ़ काबा शरीफ़, अल्लाहु अकबर।

★

## सुबह की फ़र्ज़ नमाज़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ صَلٰوةَ الْفَجْرِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى
فَرْضَ هٰذَا الْوَقْتِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला रक्अ़ तैनि सलातल् फ़ज्रि फ़र्ज़ल्लाहि तआ़ला फ़र्ज़ हाज़लवक्ति मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ़् बति श्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं नमाज़ पढ़ने की अल्लाह तआ़ला के लिए फ़ज्र की दो रक्अ़त अल्लाह की नमाज़ फ़र्ज़, इस वक़्त की फ़ज्र नमाज़, मुंह किये हुए काबा शरीफ़ की तरफ़, अल्लाहु अकबर।

## .जुहर की चार सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى
سُنَّةَ الظُّهْرِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला अर्बअ़ रकआ़तिन सुन्नत रसूलिल्लाहि तआ़ला सुन्नत ज़्जुहरि मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ़् ब तिश्शरीफति अल्लाहु अकबरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ की वास्ते अल्लाह के चार रक्अ़त सुन्नत रसूलुल्लाह की, सुन्नत वक़्त .जुहर की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अक्बर।



## .जुहर के चार फ़र्ज़ों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلٰوةَ
الظُّهْرِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَرْضَ هٰذَا الْوَقْتِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला अर्बअ़ रकआ़तिन सलातज़्ज़ुहरि फ़र्ज़ल्लाहि तआ़ला फ़र्ज़ हाज़ल् वक्ति मुत वज्जिहन इला जिहतिल कअ़् बतिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०।

नीयत करता हूं नमाज़ की अल्लाह के वासते चार रकअ़त नमाज़े .जुहर, फ़र्ज़ अल्लाह की फ़र्ज़ इस वक़्त की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## .जुहर की दो सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى
سُنَّةَ الظُّهْرِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला रक्अ़तैनि सुन्नत रसूलिल्लाहि तआ़ला सुन्नतज़्ज़ुहरि मुत वज्जिहन इला जिह तिल् कअ़् बति श्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं नमाज़ पढ़ने की वास्ते अल्लाह के, दो रक्अ़त सुन्नत रसूलुल्लाह की, सुन्नत .जुहर की, मुंह किये तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

★

## .जुहर की दो नफ़्लों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّىَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ صَلٰوةَ نَفْلِ
الظُّهْرِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला रक्अतैनि सलात नफ़िलज्जुहरि मुतवज्जिहन इला जिहतिल कअ् बति श्शरीफ़ति अल्लाहु अकबर०

नीयत करता हूं नमाज़ की वास्ते अल्लाह के दो रकअत नमाज़ नफ़्ल .जुहर की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अकबर।

## अस्र की चार सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّىَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى
سُنَّةَ الْعَصْرِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला अरबअ रकअतिन सुन्नत रसूलिल्लाहि तआला सुन्नतल अस्रि मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ् ब तिश्शरीफति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हू मै नमाज़ पढने की, वास्ते अल्लाह तआला के चार रकअत रसूलुल्लाह की सुन्नत, नमाज अस्र की, मुह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ के अल्लाहु अक्बर।

★



## अस्र के चार फ़र्ज़ों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّىَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ
الْعَصْرِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَرْضَ هٰذَا الْوَقْتِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला अर्बअ् रकआतिन सलातल् अस्री फ़र्ज़ल्लाहि तआला फ़र्ज़ हाज़ल्–वक़्ति मुतवज्जिहन इला जिहतिल कअ्ब–तिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की वास्ते अल्लाह के चार रकअत् नमाज़ अस्र की फ़र्ज़ अल्लाह की फ़र्ज़ इस वक़्त की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## मग़्रिब के तीन फ़र्ज़ों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّىَ لِلّٰهِ تَعَالٰى ثَلٰثَ رَكْعَاتِ صَلٰوةِ
الْمَغْرِبِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَرْضَ هٰذَا الْوَقْتِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला सलास रकआतिन सलातल् मग़्रिबि फ़र्ज़ल्लाहि तआला फ़र्ज़ हाज़ल् वक़्ति मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ् बतिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने कि, वास्ते अल्लाह के तीन रकअत

नमाज़ मग़्रिब की, फ़र्ज़ अल्लाह की, फ़र्ज़ इस वक़्त की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अक्बर।

## मग़्रिब की दो सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ تَعَالٰى
سُنَّةَ الْمَغْرِبِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला रकअतैनि सुन्नत रसूलिल्लाहि तआला सुन्नतल् मग़्रिबि मुतवज्जिहन इला जिहतिल कअ़ बति श्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की वासते अल्लाह के दो रकअत् सुन्नत रसूलुल्लाह की सुन्नत मग़्रिब की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## मग़्रिब की दो नफ़िलों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ صَلٰوةَ نَفْلِ
الْمَغْرِبِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला रकअतैनि सलात नफ़िलल मग़्रिबि मुत वज्जिहन इलाजिह तिल् कअब–तिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की, वास्ते अल्लाह के दो रक्अत नफ़्ल नमाज़ मग़्रिब की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अक्बर।



## इशा की चार सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
تَعَالٰى سُنَّةَ الْعِشَاءِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला अर्बअ़ रकआतिन सुन्नत रसूलिल्लाहि तआला सुन्नतल् इशाइ मुत वज्जिहन इला जिहतिल कअ़ ब तिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की वासते अल्लाह के चार रकअत् सुन्नत रसूलुल्लाह की सुन्नत इशा की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## इशा के चार फ़र्ज़ों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى اَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلٰوةَ
الْعِشَاءِ فَرْضَ اللّٰهِ تَعَالٰى فَرْضَ هٰذَا الْوَقْتِ
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला अर्बअ़ रकआतिन सलातल् इशाइ फ़र्ज़ल्लाहि तआला फ़र्ज़ हाज़ल् वक़्ति मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ़् बतिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की, वास्ते अल्लाह के चार रक्अत नमाज़ इशा की, फ़र्ज़ अल्लाह की, फ़र्ज़ इस वक़्त की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अक्बर।

# इशा की दो सुन्नतों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ سُنَّةَ رَسُوْلِ اللّٰهِ
تَعَالٰى سُنَّةَ الْعِشَاءِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला रकअ़तैनि सुन्नत रसूलिल्लाहि तआला सुन्नतल् इशाइ मुत वज्जिहन इला जिहतिल कअ़ बतिशशरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की वास्ते अल्लाह के दो रकअ़त् सुन्नत रसूलुल्लाह की, सुन्नत इशा की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के,अल्लाहु अक्बर।

ऊपर लिखी हुई नीयतें पांचो वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ अकेले पढ़ने वाले के लिये हैं। अगर उन में कोई नामाज़ इमाम के साथ पढ़े तो "मुतवज्जिहन" (मुंह किये हुए) से पहले 'इक़्तदैतु बिहाज़ल् इमामी' (पीछे इस इमाम के) भी कह दे।

# इशा की तीन रक्अ़त वित्रों की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى ثَلٰثَ رَكَعَاتِ صَلٰوةِ وِتْرِ هٰذَا
اللَّيْلِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला सलास रकआतिन सलात वित्रि हाज़ल्लैलि मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ़् बतिशशरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की, वास्ते अल्लाह के तीन रकअ़त



नमाज़े वित्रि इस रात की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के अल्लाहु अक्बर।

वित्र की तीसरी रकअ़त में .कुरआन की आयतों के पढ़ने के बाद दुआ–ए–.कुनूत पढ़े। दुआ–ए–.कुनूत इस तरह है–:

# दुआ-ए-.कुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ
بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ
وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ
وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ
وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

अल्लाहुम्म इन्ना नस्त ईनुक व नस्तग़्फ़िरूक व नुअ् मिनु बिक व नतवक्कलु अ़लैक व नुस्नी अ़लैकल् ख़ैर व नश्कुरूक वला नक्फ़रूक व नख़्ल.अु व नत्रूकु मंय्यफ़्जुरूक अल्लाहुम्म इय्या क नअ़्बुदु व लक नुसल्ली व नस्जुदु व इलैक नस्आ व नह्फ़िदु व नरजू रह्मतक वनख़्शा अ़ज़ाबक इन्न अ़ज़ाबक बिल कुफ़्फ़ारि मुल्हिक़०

ऐ ख़ुदा ! यक़ीनन हम मदद चाहते हैं तुझ से और माफ़ी मांगते है तुझ से, ईमान लाये हम तुझ पर और हम भरोसा करते हैं तुझ पर और सराहते हैं हम तुझको नेकी से और शुक्र करते हैं तेरा और ना–शुक्री नहीं करते हम तेरी और ताल्लुक़ तोड़ते हैं हम उससे जो ना–फ़रमानी करता है तेरी। ऐ ख़ुदा ! तेरी ही हम इबादत करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़

गुज़ारते हैं और सज्दा करते हैं, और तेरी ही तरफ़ कोशिश करते हैं और ताबेदारी करते हैं और उम्मीद रखते हैं हम तेरी रहमत की और हम तेरे अज़ाब से डरते हैं। यकीन है कि तेरा अज़ाब काफ़िरों को मिलेगा।

## जुम्अ़े की नमाज़ की नीयत

أُسْقِطُ صَلٰوةَ فَرْضِ هٰذَا الظُّهْرِ عَنْ ذِمَّتِيْ
بِاَدَاۤءِ صَلٰوةِ الْجُمُعَةِ لِلّٰهِ تَعَالٰى اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا
الْاِمَامِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

उस्क़ितु सलात फ़र्ज़ि हाज़ज़्ज़ुहरि अ़न् ज़िम्मती बिअदाइ सलातिल् जुमुअ़ति लिल्लाहि तआ़ला इक़्तदैतु बिहाज़ल इमामि मुतवज्जिहन इला जिहतिल कअ़ बतिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

साकित करता हूँ (ख़त्म करता हूं) मैं इस .ज़ुहर की फ़र्ज़ नमाज़ को अपने ज़िम्मे से, साथ अदा करने नमाज़ जुमअ़ के, खुदा तआ़ला के लिए, ताबेदारी की मैनें इस इमाम की, मुंह तरफ़ किए हुए काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## तरावीह की नमाज़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ صَلٰوةَ التَّرَاوِيْحِ لِلّٰهِ تَعَالٰى
مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय स्लातत्तरावीहि लिल्लाहि तआ़ला मुतवज्जिहन इला जिहतिल् कअ़बतिश्शरीफ़ति, अल्लाहु अक्बरू०



नीयत करता हू मैं कि पढ़ता हू मैं नमाज़ तरावीह की,अल्लाह तआ़ला के लिए, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अकबर।

## ईदुल्-फ़ित्र की नमाज़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ مَعَ سِتَّةِ
تَكْبِيْرَاتٍ صَلٰوةَ عِيْدِ الْفِطْرِ اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا
الْاِمَامِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआ़ला रकअ़तैनि मअ़ सित्तति तक्बीरातिन सलात ईदिल् फ़ित्रि इक़्तदैतु बिहाज़ल इमामि मुत वज्जिहन इला जिहतिल् कअ़ बतिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हू मैं नमाज़ पढ़ने की, वास्ते अल्लाह तआ़ला के दो रकअ़त साथ छः तक्बीरों[1] के नमाज़ ईदुल् फ़ित्र की, पैरवी करता हू मैं इस इमाम की, मुहं किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## ईदुल्-अज़्हा की नमाज़ की नीयत

نَوَيْتُ اَنْ اُصَلِّيَ لِلّٰهِ تَعَالٰى رَكْعَتَيْنِ مَعَ سِتَّةِ
تَكْبِيْرَاتٍ صَلٰوةَ عِيْدِ الْاَضْحٰى اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا
الْاِمَامِ مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

---

१. पहली रकअ़त में सूरः फ़ातिहा से पहले तीन तक्बीर और दूसरी रकअ़त में रूकूअ़ से पहले तीन तक्बीर।

नवैतु अन् उसल्लिय लिल्लाहि तआला रक्अतैनि मअ सित्तति तक्बीरातिन सलात ईदिल् अज़्हा इक़्तदैतु बिहाज़ल् इमामि मुत वज्जिहन इला जिहतिल कअ बतिश्शरीफ़ति अल्लाहु अक्बरू०

नीयत करता हूं मैं नमाज़ पढ़ने की, वास्ते अल्लाह के, दो रकअत साथ छः तक्बीरों[1] के, नमाज़ ईदुल अज़्हा की, पैरवी करता हूं मैं इस इमाम की, मुंह किये हुए तरफ़ काबा शरीफ़ के, अल्लाहु अक्बर।

## जनाज़े की नमाज़ की नीयत

أُصَلِّي لِلّٰهِ تَعَالٰى وَاَدْعُوْا لِهٰذَا الْمَيِّتِ اِقْتَدَيْتُ بِهٰذَا الْاِمَامِ

उसल्ली लिल्लाहि तआला व अद्ऊ लिहाज़ल् मय्यिति इक़्तदैतु बिहाज़ल् इमामि०

नमाज़ पढ़ता हूं मैं अल्लाह तआला के लिए और दुआ करता हूं मैं वास्ते इस मय्यत के, ताबेदारी की मैंने इस इमाम की।

## नीयत करके अल्लाहु अक्बर कहे और

## हाथ बांध ले, फिर यह दुआ पढ़े।

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व

२–पहली रक्अत में सूरः फ़ातिहा से पहले तीन तक्बीर और दूसरी रक्अत में रकूअ से पहले तीन तक्बीर।



जल्ल सनाउक व ला इलाह ग़ैरूक०

पाक है तू ऐ अल्लाह ! और तेरी हम्द के साथ और बरकत वाला है नाम तेरा और बुलंद है बुज़ुर्गी तेरी और बुज़ुर्ग है सना (गुण–गान) तेरी और नहीं है माबूद सिवाए तेरे।

## दूसरी तक्बीर के बाद दरूदे इब्राहीमी पढ़े,

## तीसरी तक्बीर के बाद यह दुआ पढ़े

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ

अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़क रिना व उन्साना अल्लाहुम्म मन अह्यैतहू मिन्ना फ़अह्यिही अ़लल् इस्लामि व मन तवफ़्फ़ैतह मिन्ना फ़तवफ़्फ़ हू अ़लल् ईमानि०

ऐ अल्लाह ! बख़्श तू हमारे ज़िन्दों को और हमारे मुर्दों को और हमारे हाज़िर लोगों को और हमारे ग़ायब लोगों को और हमारे छोटों को और हमारे बड़ों को और हमारे मर्दों को और हमारी औरतों को। ऐ अल्लाह ! हम में से जिस को ज़िन्दा रखेगा, तो उसको इस्लाम पर ज़िंदा रख और हम में से जिस को तू मारे, तो मार उसको ईमान पर,

## दीवाने या नाबालिग़ लड़के की मय्यत की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا

اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अल्लाहुम्मज अल्हु लना फ़र तंव्वज अल्हु लना अज्रंव्व .जुख्रंव्व जअल्हु लना शाफ़िअंव्व मुशफ़्फ़आ'०

ऐ अललाह! इसको कर तू हमारे लिए पेशवा और इसको कर तू हमारे लिए अज् और ज़ख़ीरा और इसको कर तू हमारे लिए शफ़ाअत कराने वाला और वह जिसकी शफ़ाअत .क़ुबूल कर ली जाये।

## चौथी तक्बीर के बाद

(रब्बना आतिना आख़िर तक पढ़ के सलाम फेर दे।)

## क़ब्र वालों पर सलाम का तरीक़ा

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ
اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّ نَحْنُ لَكُمْ تَبَعٌ وَّاِنَّا اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ يَرْحَمُ اللّٰهُ الْمُتَقَدِّمِيْنَ
مِنَّا وَالْمُتَاَخِّرِيْنَ نَسْاَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ
يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ وَيَرْحَمُنَا اللّٰهُ وَاِيَّاكُمْ

अरसलामु अलैकुम या अहलल् .क़ुबूरि मिनल् मुस्लिमीन अन्तुम

१. अगर मय्यत दीवानी या लड़की हो तो हु की जगह हा कहे और शाफ़िअंव्व मुशफ़्फ़आ की जगह शाफ़िअतंव्व मुशफ़्फ़अः कहे।



लना स लफ़ुंव्व नह्नु लकुम तबअुंव्व इन्ना इनशाअल्लाहु बिकुम लाहि.कून यर्हमुल्लाहुल मुत क़दिमीन मिन्ना वल् मुतअख़्ख़िरीन नस् अलुल्लाह लना व लकुमुल् आफ़ियत यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम व यर्हमुनल्लाहु व इय्याकुम०

सलामती हो तुम पर ऐ मुसलमानों में से, .क़ब्रों के लोगो! तुम हमसे आगे पहुंचने वाले हो और हम तुम्हारे पीछे आने वाले हैं और यक़ीन है कि हम अगर ख़ुदा चाहे तुम से मिलेंगे। रहम करे अल्लाह हमारे अगलों और पिछलों पर। हम मांगते हैं अल्लाह से अपने लिए और तुम्हारे लिए आफ़ियत। अल्लाह बख़्शे हमको और तुमको और रहम करे अल्लाह हम पर और तुम पर।

## रोज़े की नीयत

اَللّٰهُمَّ اَصُوْمُ غَدًا لَّكَ فَاغْفِرْ لِيْ مَا قَدَّمْتُ وَمَا اَخَّرْتُ

अल्लाहुम्म असूमु ग़दल्लक फ़ग़्फ़िरली मा क़द्दम्तु व माअख़्ख़र्तु०
ऐ ख़ुदा ! रोज़ा रखता हूं मैं सुबह को तेरे लिए पस बख़्श तू मेरे अगले और पिछले गुनाहों को।

## इफ़्तार की नीयत

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ
تَوَكَّلْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ

अल्लाहुम्म लक सुम्तु व बिक आमन्तु व अलैक तवक्कल्तु व अला रिज़्क़िक अफ़्तर्तु फ़ तक़ब्बल् मिन्नी०

ऐ अल्लाह ! मैनें रोज़ा रखा तेरे लिए और मैं ईमान लाया तुझ पर और भरोसा किया मैनें तुझ पर और तेरी ही रोज़ी से इफ़्तार किया, पस .क़ुबूल कर तू मेरे रोज़े को।

# फ़ातिहा का तरीक़ा

اَللّٰهُمَّ اَوْصِلْ ثَوَابَ مَا قَرَأْتُ مِنَ الْقُرْاٰنِ وَالصَّلَوٰتِ
وَالْكَلِمٰتِ الطَّيِّبَاتِ وَثَوَابَ مَا تَصَدَّقْتُ لَكَ
مِنْ هٰذِهِ الْاَطْعِمَةِ وَالْاَشْرِبَةِ اِلٰى رُوْحِ قُدْسِ
نَبِيِّكَ وَحَبِيْبِكَ خَاتِمِ الْمُرْسَلِيْنَ شَفِيْعِ الْمُذْنِبِيْنَ
صَاحِبِ لتَّاجِ وَالْمِعْرَاجِ اَحْمَدَ الْمُجْتَبٰى مُحَمَّدِ الْمُصْطَفٰى
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَزْوَاجِهٖ وَاَهْلِ
بَيْتِهٖ وَسَلَّمَ ثُمَّ اِلٰى رُوْحِ فُلَانٍ ثُمَّ اِلٰى اَرْوَاحِ
جَمِيْعِ الْاَنْبِيَآءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَاِلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ
ثُمَّ اِلٰى اَرْوَاحِ جَمِيْعِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِيْنَ

अल्लाहुम्म औसिल सवाब मा .करअ्तु मिनल .कुरआनि वस्सलवाति वल् कलिमाति त्तय्यिबाति व सवाब मा तसद्दक़्तु लक मिनहाज़िहिल अत्

१. .कुरआन वग़ैरह पढ़ने और खाना वग़ैरह ख़र्च करने के बाद इस तरह से पढ़े, नहीं तो मा.करातु की जगह व मा अक़्रउ और मा तसद्दक़्तु की जगह व मा अ त सद्द.कु पढ़े।

२. अगर खाने–पीने की चीज़ें न हों तो लफ़्ज सवाब से वल–अश्‌रिबति



अ़िमति वल् अश्‌रिबति इला रूहि .कुद्सि नबिय्यिक व हबीबिक ख़ातिमिल मुर्सलीन शफ़ीअ़िल् मुज़्निबीन साहिबित्ताजि वल् मिअ़ राजि अहमदल–मुज्तबा मुहम्मदि–निल–मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व अस्हाबिही व अज़्वाजिही व अह्लि बैतिही व सल्लम सुम्म इला रूहि फुलानिन[1] सुम्म इला अर्वाहि जमीअ़िल अंबियाइ वल् मुर्सलीन व इला–अ़िबादिल्लाहिस्सालिहीन सुम्म इला अर्वाहि जमीअ़िल मुअ् मिनीन बिरहमतिक या अर्हमर्राहिमीन०

ऐ ख़ुदा ! पहुंचा तू उस चीज़ के सवाब को, जो मैंने .कुरआन से, दरूद से, पाकीज़ा कलमों से पढ़ा और उस चीज़ के सवाब को, जो ख़ैरात किया मैनें तेरे लिए इन खाने और पीने की चीज़ों से तेरे नबी और तेरे महबूब, मुर्सलों के ख़ातिम, गुनाहगारों को बख़्शवाने वाले, ताज और मेराज के साहिब, अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल० की रूहे पाक की तरफ़। दरूद हो अल्लाह का उन पर और उनकी आल पर और उनके साथियों पर और उनकी बीवियों पर और उनके अहले बैत पर और सलाम हो। फ़िर फ़लाँ की रूह की तरफ़ ; फिर तमाम नबियों की, तमाम मुर्सलों की और नेक बन्दो की, फिर तमाम मोमिनों की रूहों की तरफ़ तेरी रहमत से, ऐ बड़े रहम करने वाले !

## अक़ीक़े की नीयत

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ ابْنِيْ فُلَانٍ دَمُهَا بِدَمِهٖ
وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ

तक छोड़ दे और जो इबादत कि सवाब पहुंचाने के वास्ते करे जैसे नमाज़ या रोज़ा नफ़्ल या हज या फ़क़ीरों को खाना खिलाना, पानी पिलाना या इबादत का सवाब मय्यत की रूह को बख़्शे।

१. लफ़्ज़ '.फुलानिन' की जगह, जिस को सवाब पहुंचाना हो, उसका नाम ले।

وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ وَجُزْئُهَا بِجُزْئِهٖ وَكُلُّهَا بِكُلِّهٖ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَآءً لِّابْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म हाज़िही अक़ीक़तुब्नी[1] फ़ुलानिन दमुहा बिदमिही व लह्‌मुहा बिलह्‌मिही व अ़ज़्मुहा बिअ़ज़्मिही व जिल्दुहा बिजिल्दिही व शअ़रूहा बिशअ़्रिही व जुज़उहा बिजुज़इही व कुल्लुहा बिकुल्लिही अल्लाहुम्मज्‌ अल्हा फ़िदाअल्लि इब्नी मिन्नारि०

ऐ अल्लाह ! यह अ.क़ीक़ा है मेरे फ़्लाँ बेटे का, इस का ख़ून उसके ख़ून के बदले, इसका गोश्त उसके गोश्त के बदले, इसकी हड्डी उसकी हड्डी के बदले, इसका चमड़ा उसके चमड़े के बदले, इसका बाल उसके बाल के बदले, इसका हर अंग उसके हर अंग के बदले, इसका कुल उस के कुल के बदले। या अल्लाह ! इस अक़ीक़े को मेरे बेटे के वास्ते आग से फ़िदया बना। इसके बाद बिरिमल्लाहि, अल्लाहु अक्बरू कह कर ज़िब्ह कर।

## फ़ायदा

बेहतर है कि बच्चा पैदा होने के सातवें दिन अक़ीक़ा करे। अगर लड़का हो तो दो बकरे या दो भेड़ या दो दुबें ज़िब्हे करे और लड़की हो तो एक और तमाम बदन उस जानवर का तंदुरूस्त और मोटा हो, जैसा कि .क़ुर्बानी में चाहिये और बच्चे के सर के बाल मुंडवा कर उसके बालों के वज़न के बराबर, ताक़त के मुताबिक़ चांदी या सोना तौल कर फ़क़ीरों–मुहताजों को सदक़ा करे और उस जानवर की रान बच्चे की मामा को दे। बाक़ी गोश्त अपने रिश्तेदारों, दोस्तों, पड़ोसियों और फ़क़ीरों को बांट दे या पका कर उन लोगों को खिला–पिला दे।

---

१. अगर अक़ीक़ा लड़की का हो तो 'इब्नी' की जगह 'बिन्ती' कहे और ज़मीर 'हू' की जगह 'हा' और फ़लां लफ़्ज़ की जगह उस लड़के या लड़की कानाम ले।

**फ़ायदा :–** यह सब उस वक़्त है, जबकि खुद बाप ज़िब्ह करे। अगर बाप के सिवा दूसरा कोई ज़िब्ह करे तो बाद लफ़्ज़ 'अक़ीक़तु' के उस लड़के या लड़की का नाम ले और बजाए 'इब्नी' या बिन्ती' के इब्नि या बिन्ति कहे और इब्नि या बिन्ति के बाद उस लड़के या लड़की के बाप का नाम ले।



# मुफ़ीदुस्सलात

(नमाज़ के लिए मुफ़ीद चीज़ें)

## नमाज़ की बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

बिरिमल्लाहिर्रहमानिर्रहीम० लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह० (नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के, मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम अल्लाह के भेजे हुए रसूल हैं)

हर आक़िल[1] व बालिग़[2] पर वाजिब है कि सिर्फ़ ख़ुदा की ख़ुशी के लिए बग़ैर किसी ग़रज़ के, दिल की सच्चाई के साथ, ख़ुदा के माबूद होने पर और मुहम्मद सल्ल० कि रिसालत पर ईमान लाये यानी दिल में यों समझे कि में ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत व बंदगी हरगिज़ न करूगां और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की रिसालत के हुक्मों के सिवा किसी और के हुक्मों पर हरगिज़ न चलूंगा। जब आदमी ने सच्चे दिल से ऐसा समझा और ज़बान से कलमा–

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

---

१. आक़िल वही है जो भले–बुरे में फ़र्क़ करे।

२. बालिग़ वह है जो पंद्रह वर्ष की उम्र को पहुंचा हो और औरत नौ वर्ष या बारह वर्ष की उम्र को, दूसरी पहचान यह है कि उसके नाफ़ के नीचे बाल निकल आयें.तीसरी पहचान है एहतिलाम (स्वप्न–दोष) का होना।

लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का इक़रार भी किया तो इसी को मोमिन कहते हैं, अब उस मोमिन को चाहिए कि अपने दिल में जैसा समझा है, वैसा ही अपने दिल[1] और ज़बान[2] से और अंगों से रिसालत के हुक्मों पर अमल करने लगे और शिर्क व बिद्अत और अल्लाह की नाफ़रमानी के कामों से बहुत बचता रहे और कभी ख़ुदा की इबादत के कामों को उसकी किसी मख़्लूक़ के लिए हरगिज़ न बजा लाये और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की रिसालत के हुक्मों को और आपकी रस्म व आदत को अपने शादी व ग़मी के कामों में छोड़ के लोगों की और बुरों के चाल चलन और रस्म व आदत पर न चले और आप के हुक्मों के ख़िलाफ़ हरगिज़ न करे। जब कोई इर्शाद हज़रत सल्ल० का किसी दीनदार से सुने तो झट दिल की ख़ुशी के साथ उसको मान ले और उस पर अमल करने लगे और हज़रत सल्ल० के हुक्मों पर चलने में शर्म न समझे, बल्कि उसको अपनी दोनों दुनिया की इज़्ज़त और फ़ख़र की वजह जाने, इसी को मुसलमानी कहते हैं। ख़ुदा सब ईमान वालों को नेक बात की तौफ़ीक़ दे और ईमान को दूर करने वाले कामों से बचाये, आमीन।

## नमाज़ का बयान

फिर जो मोमिन आक़िल और बालिग़ है, इस पर तमाम दिन रात में, बीमार हो या तंदुरूस्त पाँच वक़्त की नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, हर एक वक़्त की नमाज़ को उसके वक़्त में अदा ही करे, सुस्ती और कोताही से न छोड़े क्योंकि नमाज़ किसी वक़्त में माफ़ नहीं है सिवाए मौत के।

१. यानी दिल में शिर्क और बिद्अत के अक़ीदे और मुनाफ़िक़ी और बुरी नीयतें न रखे, बल्कि जो अक़ीदे हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल० ख़ुदा के पास से लाये हैं, उन पर मज़बूत होने का शक व शुबहा न लाये, शक व शुबहा लाना कुफ़्र की निशानी है।

२. यानी कुफ़्र के कलमे, बुरी बातें और ग़ीबत, गालियां, बेकार की बातें, क़िस्से–कहानियां, बुराई, ज़िंदा न करे, बल्कि अपनी ज़बान को रसूलुल्लाह सल्ल० के तहत बना दे यानी .क़ुरआन व हदीस पढ़े, नेक बात करे, बुरे कामों से लोगों को मना करे और अच्छी बात का हुक्म करे।



## रोज़े का बयान

और हर साल रमज़ान का तमाम महीने भर रोज़े रखना फ़र्ज़ है।

## ज़कात का बयान

इसके अलावा अगर कोई मुसलमान मालदार और व्यापारी और ऊंट, गाय, बकरी वग़ैरह का मालिक भी हो तो उसको हर–हर साल की एक बार अपनी सब मिल्कियत की ज़कात देना फ़र्ज़ है।

## हज का बयान

और उम्र भर में एक बार काबा शरीफ़ का हज करना फ़र्ज़ है।

## सदक़ा-ए-फ़ित्र और .क़ुर्बानी का बयान

और मालदार पर यह भी वाजिब है कि हर साल ईदुल–फ़ित्र के दिन नमाज़ से पहले सदक़ा ए–फ़ित्र अदा करके ईद की नमाज़ अदा की जाए और ईदे–अज़्हा में नमाज़ के बाद .क़ुरबानी करें।

## नमाज़ छोड़ देने की सज़ा

अगर कोई एक वक़्त की नमाज़ बे–उज़्र क़ज़ा कर के पढ़ेगा तो उस के बदले अस्सी हक़्बे दोज़ख में जलेगा। हक़्बा अस्सी हज़ार वर्ष की मुद्दत को कहते हैं।

## ज़कात न देने की सज़ा

अगर कोई माल रख के ज़कात न देगा तो वह माल दोज़ख़ में गर्म करके क़ियामत के दिन उसको दाग़ देगें और ज़ेवर अजगर बनके उसको

डसा करेगा।

## शिर्क की सज़ा

और जो कोई ख़ुदा की ज़ात व सिफ़तो में उसकी मख़्लूक़ को शरीक करेगा, वह शख़्स हमेशा–हमेशा दोज़ख़ में रहेगा, कभी उसका छुटकारा नहीं (अल्लाह हमें इससे पनाह दे) अब ईमान वालों को चाहिये कि शिर्क के काम और अक़ीदे और बातें मालूम करके उससे बचते रहें, नहीं तो हमेशा–हमेशा दोज़ख़ में जलना पड़ेगा।

## फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त

फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त सुबहे सादिक़ (सुबह की सफ़ेदी) तुलू (उगना) होने के बाद से लेकर सूरज निकलने से पहले तक का है, उसके दर्मियान दो रक्अतें सुन्नत, और दो रकअतें फ़र्ज़ हैं।

## .ज़ुहर का वक़्त

.ज़ुहर का वक़्त सूरज ढलने से ले के हर चीज़ का साया उसके बराबर होने तक का है। उसके दर्मियान पहले चार रक्अतें सुन्नत, फिर चार रक्अतें फ़र्ज़, बाद में दो रक्अतें सुन्नत हैं।

## अ़स्र का वक़्त

और अ़स्र का वक़्त हर चीज़ का साया दोगुना होने से लेकर सूरज डूबने तक का है, इसके दर्मियान चार रक्अतें फ़र्ज़ हैं।

## मग़्रिब का वक़्त

मग़्रिब का वक़्त सूरज डूबने के बाद से लेकर लाली ग़ायब होने तक



का है, इसके दर्मियान तीन रक्अ़तें फ़र्ज़ और बाद में दो रक्अतें सुन्नत हैं।

## इशा का वक़्त

और इशा का वक़्त लाली गुम होने से लेकर सुबहे सादिक़ होने से पहले तक का है, उसके दर्मियान चार रक्अतें फ़र्ज़, बाद में दो रकअ़तें सुन्नत हैं।

## वित्र की नमाज़

और इसके बाद वित्र की तीन रक्अ़तें भी ज़रूर एक सलाम और दो क़अ़दों से पढ़े।

जब नमाज का वक़्त आये तो पहले बदन को पाक करे। अगर .गुस्ल[1] की जरूरत हो, तो .गुस्ल करे, वरना वु.जू अच्छी तरह से करे, अगर पानी न मिले तो तयम्मुम करे, इसके बाद अज़ान दे।

---

१. जब कोई मुसलमान मर्द हो या औरत, सो कर उठे और अपने कपड़े पर तरी मनी की पाये, चाहे एहतिलाम (स्वप्न दोष) याद न हो, .गुस्ल करे। इसी तरह जब अपनी औरत से मिले या कोई बद–बख़्त लूती मर्द या औरत से सोहबत करे, जब हश्फ़ा (ख़ास अंग का अगला हिस्सा) ग़ायब हो जाए, तब दोनों पर .गुस्ल वाजिब होता है, चाहे इंज़ाल (मनी का निकलना) न हो। ऐसे ही अगर कोई बद–बख़्त जानवर से या मुर्दे से सोहबत करे या जलक़ (हाथ से मनी गिराना) मारे तो उस पर .गुस्ल वाजिब होने के लिए इंज़ाल शर्त है लेकिन इन कामों के करने वाले पर अल्लाह की लानत उतरती है, बहुत डरना चाहिए और जो औरत हैज़ व निफ़ास से पाक हो, उस पर .गुस्ल वाजिब होता है। हैज़ उसको कहते हैं जो बालिग़ औरत यानी नौ वर्ष की उम्र से पचपन वर्ष तक हर महिने में कई दिन ख़ून रहम (गर्भाशय) से जारी रहता है, अगर तीन रात–दिन से कम और दस रात–दिन से ज़्यादा जारी हो, तो वह बीमारी है, .गुस्ल करके नमाज़ अदा करनी चाहिए और सिवाए सफ़ेद रंग के, जिस रंग का ख़ून कि रहम से जारी रहे, वह हैज़ है। जब सफ़ेदी पर आये तब पाकी पहचाने। हर नमाज़ी को चाहिये कि जब नमाज़ का वक़्त आये और पाख़ाना जाने की ज़रूरत हो

# अज़ान के बोल

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाहु अक्बरू० अल्लाहु अक्बरू० अल्लाहु अक्बरू० अल्लाहु अक्बरू० अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु० अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु० अश्हदु अन्न मुहम्मदर्र सूलुल्लाह० अश्हदु अन्न मुहम्मदर्र सूलुल्लाह० हय्य अ़लस्सलाह० हय्य अ़लस्सलाह० हय्य अ़लल् फ़लाह० हय्य अ़लल्फ़लाह० अल्लाहु अक्बरू, अल्लाहु अकबरु० लाइलाह इल्लल्लाहु०

और सुबह की अज़ान में 'हय्य अ़लल्फ़लाह' के बाद दो बार 'अस्सलातु ख़ैरुम् मिनन्नौमि० कहे। जो कोई अज़ान सुने–तमाशा छोड़ दे और अज़ान सुनने की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये और जैसा अज़ान् देने वाला कहता है, वैसा ही आप भी कहे और 'हय्य अ़लस्सलाहः और 'हय्य अ़लल् फ़लाह' के जवाब में 'ला हौल व ला .कुव्वत इल्ला बिल्लाहि' कहे जब अज़ान ख़त्म हो, दरूद पढ़े और यह दुआ अल्लाह तआ़ला से मांग––

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ

---

तो जाये और इस्तिंजा करने के बाद वु.जू करने के लिए क़िबले की तरफ़ मुँह करके बैठे और पहले दोनों हाथ पहुंचों तक धोये, उसके बाद तीन बार मुंह भर कुल्ली करे अगर रोज़ेदार हो हल्की कुल्ली करे और मिस्वाक करे और तीन बार नाक में पानी ले, तीन बार पूरा मुंह धोये और दाढ़ी में पानी पहुंचाये और तीन बार कुहनियों तक हाथ धोये और सारे सर का और कानों का मसह करे और दोनों पांव टख़नों तक धोये।



وَالْفَضِيْلَةَ وَالدَّرَجَةَ الرَّفِيْعَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِيْ وَعَدْتَّهٗ وَارْزُقْنَا شَفَاعَتَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्अ़वति त्ताम्मति व स्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मद–निल–वसीलत वल् फ़ज़ीलत वद्दर जतर्र फ़ीअ़त वब्अ़स्हु मक़ामम महमूद–निल–लजी व उ़त्तहु वर्ज़ुक़्ना शफ़ाअ़तहू यौमल् क़िया मति इन्नक ला तुख़्लिफ़ुलमीआ़द०

और इक़ामत (नमाज़ खड़ी होने के वक़्त की अज़ान) अज़ान की तरह है लेकिन इक़ामत में जल्दी–जल्दी बोले और 'हय्य अ़लल् फ़लाह' के बाद दो बार 'क़द क़ामतिस्सलाहः कहे।

# नमाज़ की सूरत

पाक–साफ़, बा–वुज़ू, पाक कपड़े से शरअ़ी सतर (शर्मगाह) ढांपे हुए, पाक जगह पर क़िबले की तरफ़ मुंह करके इक़ामत बोले और फ़लां नमाज़ अदा करता हूँ कह के, दिल की ठीक नीयत से अल्लाहु अक्बरू कहे और उस वक़्त दोनों हाथ कान की लवों तक उठा के बायें हाथ के पंजे पर सीधे हाथ की हथेली रखकर नाफ़ से उतरते बांध ले, लेकिन औ़रतें मोंढ़ों तक दोनों हाथ उठा के सीने पर बाधं लें, फिर–

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुब्हानकल्लाहुम्म व बिहम्दिक व तबारक स्मुक व तआ़ला जद्दुक व ला इलाह ग़ैरुक० अऊ़जु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम० बिस्मिल्लाहिर्र हमानिर्रहीम०

पढ़े इसके बाद अल्हम्दु की पूरी सूरः पढ़कर आमीन बोले और एक सूरः या एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें पढ़े और अल्लाहु अक्बर कह के रुकूअ़ में जाए और 'सुब्हान रब्बियल् अ़ज़ीम०' तीन बार कहे और 'समिअ़ल्लाहु लिमन हमिदह' बोलकर रुकूअ़ से सर उठाये और 'रब्बना लकल् हम्दु' बोले, फिर अल्लाहु अक्बर कहता हुआ सज्दे में जाये और सुब्हान रब्बि यल् आला' त़ीन बार बोले और अल्लाहु अक्बर कह के सज्दे

से उठके सीधा बैठे फ़िर अल्लाहु अक्बर कह के दूसरा सज्दा करे और इसी तरह 'सुब्हान रब्बियल आला' तीन बार कहे, फिर अल्लाहु अकबर कहता हुआ सज्दे से उठ खड़ा हो और दूसरी रकअ़त बिना सना और अऊ़जु के सिर्फ़ बिस्मिल्लाह से, अल्हम्दु और दूसरी एक बड़ी आयत या तीन छोटी आयतें पढ़ के अदा करे जैसा आगे कहा गया है। अब अगर नमाज़ दोगाना हो तो क़ादा में बैठे और कहे---

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبَاتُ
اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى
عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى
اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि व स्सला वातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रह्मतुल्लाहि व बर कातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला अ़िबादिल्लाहि स्सालिहीन० अश्हदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुह० अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव्‌ अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अ़ला इब्राहीम व अ़लाआलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद० अल्लाहुम्म बारिक अ़ला मुहम्मदिंव्‌ अ़ला आलि मुहम्मदिन कमा बारक्त अ़ला इब्राहीम व अ़ला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद०

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ
عَذَابِ جَهَنَّمَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ
وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْمَاْثَمِ وَالْمَغْرَمِ

अल्लाहुम्म[1] इन्नी अऊ़ज़ुबिक मिन अ़ज़ाबि जहन्नम व अऊ़ज़ु बिक मिन अ़ज़ाबिलक़ब्रि व अऊ़ज़ुबिक मिन फ़ित्नतिल मसीहि द्दज्जालि व अऊ़ज़ु बिक मिन फ़ित्नतिल् महया वल्ममाति०अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़.ज़ुबिक मिनल् मअ् समि वल् मग़रम०

१. यह दुआ़ दरूदे इब्राहीमी के बाद जो लिखी गयी है, मिश्कात शरीफ़ में है और एक दुआ़ दरूदे इब्राहीमी के बाद नमाज़ में पढ़ने की यह है –



यहां तक पढ़ के 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि सीधे–बाएं कह के नमाज़ ख़त्म करे और अगर चार रक्अ़ती नमाज़ हो तो क़अ़्दे में अत्तहीयात 'अ़ब्दुहू व रसूलुहू' तक पढ़ के अल्लाहु अक्बर कहता हुआ, उठ खड़ा हो और तीसरी, चौथी रक्अ़त अदा करे। फिर दूसरे क़अ़्दे में बैठ कर अत्तहिय्यात और दरूदे इब्राहीमी और दुआ–ए–मासूरा पढ़के 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाह', सीधे–बाएं कहके नमाज़ ख़त्म करे और यह भी जाने कि चार रकअ़ती और तीन रकअ़ती फ़र्ज़ नमाज़ों में अगली दो ही रक्अ़तों में .क़ुरआन का पढ़ना वाजिब है और यह भी जानना चाहिए कि वित्र की तीसरी रक्अ़त में सूरः मिलाने के बाद अल्लाहु अक्बर कहके दोनों हाथ कान की लवों तक और औरतें मूंढों तक ले जाकर बांधें और .क़ुनूत की यह दुआ़ पढ़ें।

# दुआ़-ए-.क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ
وَنُثْنِيْ عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ
يَّفْجُرُكَ اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَ
نَحْفِدُ وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌ

अल्लाहुम्म इन्ना नसतअ़ीनुक व नस्तग़्फ़िरूक व नुअमिनु बिक व न तवक्कलु अ़लैक व नुस्नी अ़लैकल ख़ैर व नश्कुरूक व ला नक.फ़ुरूक व नख़्लअु व नतरूकु मंयफ़्जुरूक० अल्ला–हुम्म इय्याक नअ़बुदु वलक नुसल्ली०

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا وَّلَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ
فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ وَارْحَمْنِيْٓ اِنَّكَ اَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ

अल्लाहुम्म इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी .ज़ुल्म न कसीरंव्व ला यग़्फ़िरूज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त फ़ग़्फ़िर ली मग़्फ़िरतम्मिन अ़िन्दिक वर्हम्नी इन्नक अन्तल ग़फ़ूरूर्रहीम०

व नस्जुदु व इलैक नस्आ व नह्फ़िदु व नर्जू रहमतक व नख़्शा अज़ाबक इन्न अज़ाबक बिल् कुफ़्फ़ारि मुल्हिक़०

दुआ पढ़ने के बाद अल्लाहु अक्बर कह के रूकूअ में जाये और नमाज़ पूरी करे।

## जुम्अे का बयान

जुम्अे के दिन .गुस्ल करे और पाक कपड़े पहन कर मस्जिद को जाये और 'तहिय्यतुल् मस्जिद' की दो रक्अत नमाज़ अदा करे। इसके बाद चार रक्अतें जुम्अे की पढ़े। जब इमाम .खुत्बा पढ़ना शुरु करे, नमाज़ वग़ैरह रोक कर .खुत्बा सुनने में लग जाये। जब दोनों .खुत्बे हो जाएं, दो रक्अत फ़र्ज नमाज़ जुम्अे की इमाम के साथ अदा करे। इसके बाद फिर चार रक्अत सुन्नत नमाज़ पढ़े। जुम्अे के दिन अज़ान के बाद, नमाज़ पूरी होने तक मुसलमानों का ख़रीदना–बेचना हराम है।

## ईदुल-फ़ित्र का बयान

ईदुल–फ़ित्र के दिन नहा–धो के पाक कपड़े पहने हुये, .खुश्बू लगा कर सदक़ा फ़ित्र का अदा कर के और खा–पीकर के धीरे से तक्बीरें बोलते हुए ईदगाह को जाए और वहां नफ़्ल नमाज़ न पढ़े। जब सब लोग जमा हो जाएं, ईद की दो रक्अतें इस तरह से अदा करे कि पहली रक्अत में सना के बाद और अल हम्दु से पहले तीन बार अल्लाहु अक्बर कहे और दूसरी में अल हम्दु और सूरः के बाद कहे और हर बार हाथ उठाये और छोड़ दे। हां, पहली रक्अत में तीसरी बार हाथ बांध ले, नमाज़ के बाद इमाम .खुत्बा पढ़े और तमाम अहकाम दोनों ईदों के बतलाये और सब नमाज़ी बैठकर सुनें और इमाम अबूहनीफ़ा रह० के नज़दीक दोनों ईदों की नमाज़ में छः तक्बीरें हैं। अगर इमाम शाफ़ई मज़हब का हो और वह छः से ज़्यादा कहे तो उसकी ताबेदारी करनी चाहिए।



## ईदु-ल-अज़्हा का बयान

ईदुल अज़्हा में भी ऐसा ही करे, मगर इस ईद में सदक़ा–ए–फ़ित्र नहीं, रास्ते में तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहता हुआ जाए और नमाज़ के बाद मालदारों पर .क़ुर्बानी वाजिब है और ज़िल्हिज्जा की नवीं से तेरहवीं की अस्र की नमाज़ तक हर फ़र्ज नमाज़ के बाद तक्बीर बोलना वाजिब है। तक्बीर यह है:–

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ۔

अल्लाहु अक्बरू अल्लाहु अक्बरू ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरू अल्लाहु अक्बरू व लिल्लाहिल हम्दु०[1]

## मुसाफ़िर की नमाज़ का बयान

जब आदमी अपने शहर से तीन रात–दिन की दूरी का सफ़र करे तो चाहिये कि चार रक्अती नमाज़ फ़र्ज क़स्र करे (छोटा कर दे) यानी दो रक्अत पढ़े और जब वहां पहुंचे और पंद्रह दिन के अंदर फिर वहां से निकलने का इरादा है, तो नमाज़ को क़स्र ही पढ़ता जाए। अगर पंद्रह दिन या इससे ज़्यादा रहने का इरादा है तो नमाज़ को क़स्र न करे, चार रक्अत ही पढ़ता जाये। अगर मुसाफ़िर बस्ती वाले नमाज़ियों के पीछे नमाज़ पढ़े, तो पूरी रक्अतें पढ़े। अगर मुसाफ़िर बस्ती वालों को नमाज़ पढ़ाये, तो क़स्र ही पढ़े, नमाज़ पूरी होने के बाद सलाम फेर के पीछे पढ़ने वालों से कह दे कि मुसाफ़िर हूं, अपनी दो रक्अत बाक़ी अदा कर लें।

## बीमार की नमाज़ का बयान

ऐ भाइयो ! पालनहार ने तुम पर रहम करके सफ़र में चार रक्अत

---

१ अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है,अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है,अल्लाह सबसे बड़ा है और अल्लाह ही के लिए है सब तारीफ़।

वाली नमाज़ को दो रक्अ़त पढ़ने का हुक्म दिया और रोज़े को भी सफ़र में न रखने को जायज़ फ़रमाया, देखो कितना बढ़ा एहसान है–तुम इतनी आसानी के बावजूद नमाज़ को बिल्कुल छोड़े हुए हो। और भी उसका एहसान देखो कि खड़े रहने की ताक़त न हो तो बैठे हुए नमाज़ पढ़ना, अगर बैठने की ताक़त न हो तो लेटे हुए इशारे से नमाज़ पढ़ने का हुक्म फ़रमाया है और दरिंदे या दुश्मन का डर हो तो चलते–चलते सवार हो या पैदल नमाज़ पढ़ने का हुक्म फ़रमाया है, लेकिन किसी वक़्त नमाज़ छोड़े ने का हुक्म नहीं है।

# मुसलमानों की मय्यत का हक़

जब कोई मुसलमान मर जाए, तब मुसलमान जमा होकर उसको नहला--धुला के कफ़न पहना के जल्द जनाज़े की नमाज़ अदा कर लें।

# जनाज़े की नमाज़ का बयान

जनाज़े की नमाज़ का तरीक़ा यह है कि इमाम मय्यत के सीने के सामने खड़ा रहे और पीछे पढ़ने वाले तीन लाइन बन जाएं, मय्यत की और ज़िंदों की मग़्फ़िरत के लिए अल्लाह तआ़ला से दुआ मांगने की नीयत से दोनों हाथ कानों तक लेजा कर अल्लाहु अक्बर कहे और दोनों हाथ बांध ले और सना पढ़े।

## सना यह है

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالٰى جَدُّكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ

सुब्हान कल्लाहुम्म व बिहिम्दिक व तबारकस्मुक व तआला जद्दुक व जल्ल सनाउक व लाइलाह ग़ैरूक०

फिर अल्लाहु अक्बर बोले और दरूदे इब्राहीमी, जो जनाज़े की नमाज़ में पढ़ते हैं पढ़े, फिर अल्लाहु अक्बर कहे और यह दुआ पढ़े–



اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ۞ اَللّٰهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا اَجْرَهٗ وَلَا تَفْتِنَّا بَعْدَهٗ

अल्लाहुम्म ग़्फ़िर लिहय्यिना व मय्यितिना व शाहिदिना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना वज़ करिना व उन्साना अल्लाहुम्म मन अह्यैतहू मिन्ना फ़अह्यिही अलल् इस्लामि व मन तवफ़्फ़ैतहू मिन्ना फ़तवफ़्फ़हू अ़लल् ईमानि० अल्लाहुम्म ला तह्रिम्ना अजरहू व ला तफ़्तिन्ना बअ़्दहू०

फिर अल्लाहु अक्बर कह कर सीधे और बायें 'अस्सलामु अ़लैकुम व रहमतुल्लाहि' कहे, अगर मय्यत ना बालिग़ लड़का हो तो दरूद के बाद अल्लाहु अक्बर कहके यह दुआ अल्लाह से मांगे।

## दुआ यह है

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا

अल्लाहुम्मज अ़लहु लना फ़र तव्वज अ़लहु लना अज्रव्व .ज़ुख्रव्वज अ़लहु लना शाफ़िअ़व्व मुशफ़्फ़आ०

अगर मय्यत ना बालिग़ लड़की हो तो यह दुआ पढ़े–

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا
فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ۞

अल्लाहुम्मज अ़ल्हा लना फ़र तव्वज् अ़लहा लना अज्रव्व .ज़ुखरव्वज अ़ल्हा लना शाफ़िअ़तव्व मुशफ़्फ़अ़:०

फिर मय्यत को उठाकर क़ब्रस्तान में ले जाएं और उसको दफ़न करने में लग जाएं, जब मय्यत को क़ब्र में रखें तो कहें–

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाहि व.अ़ला मिल्लति रसूलिल्लाह०

और मय्यत का मुंह क़िब्ले की तरफ़ करें। जब दफ़न कर चुकें, क़ब्र पर बहुत सा पानी डालें ताकि मिट्टी जम जाए और अल्लाह से मय्यत की मग़्फ़िरत के वास्ते दुआ मांगें, उसके बाद मय्यत के क़रीबी रिश्तेदारों को सब्र की नसीहत करें।

# नमाज़ के हुक्म

नमाज़ पढ़ने वाला जन्नती, छोड़ने वाला गुनाहगार और इन्कार करने वाला काफ़िर है, नमाज़ किसी हाल में माफ़ नहीं। ज़रूरी मस्अले इस नक़्शे में लिखे गये है।

| रक्अतों की तायदाद | | | | | वक़्त | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाम | फ़र्ज़ | वाजिब | सुन्नत | नफ़्ल | कब से शुरु | कब खत्म | मुस्तहब |
| फ़ज्र | २ | ० | २ | उस वक्त नफ़्ल मना है | सुबहे खदिक़ से | सूरज निकलने तक | जब रोशनी हो जाए |
| जुहर | ४ | ० | ६ | २ | दोपहर ढलने पर | दो गुना या एक गुना साया होने तक | गर्मियों में कुछ देरी चाहिए और जाड़ों में जल्दी बेहतर है |
| अस्र | ४ | ० | फ़र्ज़ से पहले ४ | अस्र के बाद नफ़्ल मना है | जुहर के बाद से | सूरज डूबने तक | जब तक सूरज पीला न हो |
| मग़रिब | ३ | ० | २ | २ | सूरज डूबने के बाद से | सफ़ेद लाली डूबने तक | बहुत जल्दी करे, मगर बादल में कुछ देरी चाहिए |

१. फ़र्ज से पहले ४ सुन्नत और फ़र्ज के बाद २ सुन्नत, फिर २ नफ़्ल।



| रक्अतों की तायदाद | | | | | वक़्त | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इशा | ४ | वित्र ३ | ६[2] | ४ | मग़्रिब के बाद से | सुबह सादिक़ तक लेकिन इशा से पहले सोना और बे-उ.ज् आधी रात के बाद पढ़ना मकरूह है | तिहाई रात तक मगर बादल में जल्दी चाहिए |
| जुमा | २ | ० | १०[3] | २ | ठीक जुह्र का वक़्त | ठीक जुहर का वक़्त | मरीज़ और माज़ूर (मजबूर) घर में जुहर बे-जमाअत पढ़ सकते है। |
| दोनों ईदें | ० | २ | ० | ० | सूरज निकलने के बाद | दोपहर तक | जल्दी |

★

२. पहले ४ सुन्नत, फिर ४. फ़र्ज़,फिर २ सुन्नत, फिर २ नफ़्ल, फिर ३ वित्र, फिर २ नफ़्ल, मगर वित्र का वक़्त इशा के फ़र्ज़ के बाद से सुबह तक है।

३. खुत्बे से पहले ४ सुन्नत और २ रक्अत फ़र्ज़ के बाद ४ सुन्नत, फिर २ सुन्नत. फिर. २ नफ़्ल।

# वुज़ू की ज़रूरतों का नक़्शा

| फ़र्ज़ ४ | सुन्नत ११ | मुस्तहब ३ | मकरूह ५ | मुफ़्सिद ३ |
|---|---|---|---|---|
| १. पूरा मुँह धोना,<br>२. दोनों हाथ कुहनियो तक धोना,<br>३. चौथाई सर का मसह करना,<br>४. दोनों पांव टख़ने तक धोना। कहीं बाल बराबर सूखा न रहे। | १. नीयत,<br>२. बिस्मिल्लाह,[1]<br>३. दोनों हाथों को पहुंचो तक धोना<br>४. कुल्ली करना,<br>५. मिस्वाक करना,<br>६. नाक मे पानी डालना<br>७. तमाम सर और कानों का मसह करना<br>८. दाढ़ी और उंगलियों का ख़िलाल करना<br>९. तर्तीब[2]<br>१०. तीन-तीन बार हर एक अंग धोना,<br>११. लगातार अंगों का धोना यानी एक सूखने न पाये कि दूसरा अंग धो डाले। | १. गरदन का मसह[3]<br>२. वुज़ू में कलमा-ए-शहादत और दरूद पढ़ना,<br>३. दाहिनी तरफ़ से शुरू करना, | १. दुनिया की बातें करना,<br>२. दाहीने हाथ से नाक साफ़ करना,<br>३. नजिस जगह वुज़ू करना,<br>४. सुन्नत के ख़िलाफ़ वुज़ू करना<br>५. पानी ज़्यादा ख़र्च करना। | १. पेशाब-पाख़ाना पाद वग़ैरह, मुंह भर कर कै, ख़ून या पीप अगर बहने लगे।<br>२. सोना[4]<br>३. नमाज़ में ज़ोर से हंसना[5] |

१ कुछ लोगों के नज़दीक बिस्मिल्लाह वुज़ू में वाजिब है।
२. तर्तीब यानी जो अंग पहले धोते हैं उसे पहले धोये।
३ मसह का तरीक़ा-दोनों तर हाथ इस तरह सर पर रखे कि अंगूठा और कलमा की उंगली अलग रहे, फिर गरदन तक हाथ ले जाए और गरदन का मसह भी करके दोनों हाथ माथे तक इस तरह वापस लाये कि अंगूठे और कलमा की उंगलियां सर में लगें, और बाक़ी हाथ अलग

शेष 50 पर



# नमाज़ की ज़रूरतों का नक़्शा

| फ़र्ज़ १५ | वा:जिब ११ | सुन्नत १३ | मकरूह ११ | मुफ़्सिद ६ |
|---|---|---|---|---|
| १. पाकी बदन की, | १. अल-हम्दु पढ़ना, | १. अज़ान, | १. बे फ़ायदा काम करना | १. इमाम से आगे खड़ा होना, |
| २. पाकी कपड़े की | २. सूर: या आयतें मिलाना,[1] | २. तकबीर या इकामत, | २. लाइन से अलग खड़े होना, | २. कुछ खाना-पीना |
| ३. पाकी नमाज की जगह की, | ३. अत्तहियात, | ३. सुब्हानक, | ३. नंगे सर नामज पढ़ना, | ३. देखकर पढ़ना |
| ४. सतर (शर्मगाह) ढांकना | ४. दो रक्अत के बाद बैठना, | ४. अऊज़ुबिल्लाह, | ४. मर्द को जोड़ा बांधना, | ४ ख़ुद छींकना खांसना |
| ५. वक़्त पर नामज पढ़ना, | ५. तर्तीब,[2] | ५. बिमिल्लाह, | ५. लटकता हुआ कपड़ा उठाना, | ५. बात करना, |
| ६ क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना, | ६. तअदील,[3] | ६. आमीन, | ६. अंगड़ाई लेना, | ६. और ज़्यादा काम,[4] |
| ७. नीयत करना, तकबीर, | ७. क़ोमा, | ७. उठते-बैठते | ७. उंगली चटख़ाना | |
| ८. तकबीरे तहरीमा, | ८. सलाम, | ८. सज्दा और रुकूअ़ में तस्बीह तीन-तीन बार, | ८. चादर वग़ैरह लटकाना, | |
| ९. क़याम (खड़ा होना), | ९. इमाम को इशा, मग़रिब और फ़ज्र की दो रक्अतें बुलन्द आवाज़ से पढ़ना, बाक़ी धीरे से पढ़ना, | ९. दरूद, | ९. सुन्नत को छोड़ देना, | |
| १०. क़िरात यानी कुछ कुरआन पढ़ना, | १०. वित्र में दुआ-ए कुनूत पढ़ना | १०. दुआ, | १०. मर्द को लाल या पीला या रेशमी कपड़ा या चांदी या सोना पहनना, | |
| ११. रुकूअ़, | १ दोनों ईदों की पहली रक्अत में अल-हम्दु से पहले और दूसरी रक्अत में रुकूअ़ से | ११. नाफ़ के नीचे हाथ बांधना, | ११. शरीअ़त के ख़िलाफ़ कोई काम करना, | |

| फ़र्ज़ १५ | वाजिब ११ | सुन्नत १३ | मकरूह ११ | मुफ़्सिद |
|---|---|---|---|---|
| | पहले तीन-तीन बार अल्लाहु अकबर कहना। | | | |
| १२. सज्दा, | | | | |
| १३. क़ादा-ए-अख़ीरा, | | १२. क़ादा में दो ज़ानों बैठना, १३.और जो क़ायदे नमाज़ में उठने-बैठने के हैं, ये सब सुन्नत हैं, इनका छोड़ना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। | | |
| १४. अपने किसी काम से नमाज़ तमाम करना, १५. जुमा की नमाज़ में .ख़ुत्बा। | | | | |

रहे और हाथ की हथेली सर पर रहे, इसके बाद कान का मसह करे कि कलमा की उंगली कान के अन्दर और अंगूठा बाहर रहे। मसह पूरा हो गया।

४. अगर खड़े या बैठे, बे-टेक लगाये हुए वु.जू न टुटेगा।

५. ज़ोर से हंसना, जानना चाहिए कि हंसी की तीन क़िस्में हैं, एक मुस्कराना यानी ऐसा हंसना कि न खुद सुने और न कोई दूसरा सुने। इससे नमाज और वुज़ू दोनों क़ायम रहते हैं। दूसरा ऐसी आवाज़ से हंसना कि खुद सुने और दूसरा कोई न सुने, इससे नमाज़ टूट जाती है और वु.जू बाक़ी रहता है, तीसरे ज़ोर से हंसना, खिलखिला कर हसना, इससे वु.जू और नमाज़ दोनों टूट जाते हैं।

१. फ़र्ज़ की सिर्फ़ पहली दो रकअतो में सूरः मिलाये, बाक़ी रकअतों में सिर्फ़ अल-हम्दु पढ़े और वाजिब और सुन्नत व नफ़्ल की सब रकअतों में सूरःमिलाना ज़रूरी है।

२. यानी पहले की चीज़ें या काम पीछे न करदे।

३. तअदील यानी सब अर्कान (चीजें या काम)अच्छी तरह इत्मीनान से अदा करना।

४. जो काम दोनों हाथों से होता है और जो लगातार तीन बार किया जाता है।



| नमाज़ के काम | फ़र्ज़ | वाजिब | सुन्नत |
|---|---|---|---|
| सतरे औरत | मर्दों को नाफ़ से ज़ानुओं तक और औरतो को मुंह और दोनों हाथ और पांवों के टख़नों के सिवाए तमाम बदन ढांकना, | | और तमाम बदन ढांकना मगर मर्दों को टखने ढांकना हराम है। |
| तहारत | अगर नजिस हो तो .गुस्ल करे, बे-वुजू हो तो वु.जू करे। एक दिरहम से ज़्यादा कपड़ा या बदन नजिस न हो, | | .ख़ूब पूरी तहारत (पाकी) हो। |
| इस्तिक़्बाल | यानी क़िब्ले की तरफ़ सीना करना | | सज्दे की जगह पर नज़र रखना। |
| तक्बीरे तह्‌रीमा | नीयत बाधते वक़्त अल्लाहु अक्बर कहना | | मर्दों को दोनों हाथ कानो तक और औरतों को मोंढों तक उठना, |
| क़ियाम | सीधा बे-आड़ लगाये खड़ा होना | | मर्दों को नाफ़ के नीचे और औरतों को सीने पर हाथ बांधना और सुब्हानकल्लाहुम्म आख़िर तक पढ़ना, |
| क़िरअत | .क़ुरआन मजीद की तीन आयतें छोटी, या एक बड़ी आयत पढ़ना, | अल हम्दु पढ़ना और उसके साथ कुछ .क़ुरआन पढ़ना | अऊज़ुबिल्लाह, बिस्मिल्लाह पढ़ना, अलहम्दु के बाद आमीन धीरे से कहना, |
| रुकूअ़ | झुक जाना | इत्मीनान के साथ रुकूअ़ करना | सुब्हान रब्बियल अज़ीम तीन बार कहना हाथ घुटनों पर रखे और उंगलिया फैली रहें पीठ और सर तख़्ते की तरह बराबर रहे। |
| क़ौमा (यानी रुकूअ़ के बाद खड़ा होना) | | अच्छी तरह खड़े होना | सीधे खड़े होकर समिअल्लाहु लिमन हमिदह कहना, |

| नमाज़ के काम | फ़र्ज़ | वाजिब | सुन्नत |
|---|---|---|---|
| सज्दा[1] | नाक और माथा ज़मीन पर रखना | इत्मीनान से सज्दा करना | 'सुब्हान रब्बियल आला' तीन बार कहना, हाथ की उंगलियां मिली हुई क़िब्ला रुख़ रहे, मर्दों के रान और पेट और बाज़ू वग़ैरह में फ़र्क़ रहे और औरतें सब मिला रखें। |
| जल्सा (यानी पहले सज्दे के बाद बैठना) | | इत्मीनान से | दो ज़ानों बैठना और एक तस्बीह के बक़द्र रुक कर के तकबीर कहते हुए दूसरा सज्दा करना |
| क़अ्दा-ए-ऊला | | दो रक्अतों के बाद अत्तहीयात पढ़ने के लिए बैठना | मर्दों को दो ज़ानों बायें पांव के पंजे पर बैठना और दाहिने पांव का पंजा खड़ा रखना और औरतें दोनो पांव दाहिनी तरफ़ निकाल कर बायीं सुरीन पर बैठें। |
| क़ादा-ए-उख़्रा | जब सब रक्अतें पूरी हों, तो अत्तहिय्यात के लिए बैठना, | अत्तहीयात पढ़ना | दो ज़ानों बैठकर अत्तहीयात के बाद दरूदे इब्राहीम और दुआ पढ़ना। |
| पूरा करने वाला काम | अपने काम से नमाज़ पूरी करना, | अस्सुलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह कहना, | दायें-बायें मुंह फेरना। |

★

१. सज्दा सात अंगो पर फ़र्ज़ है—माथा, नाक, और दोनों हाथों के पंजे और दोनों घुटने, और दोनों क़दमों के किनारे यानी पांवों की उंगलियां—ये सब अंग ज़मीन पर रहें, बिना उ.ज़ के, अगर एक क़दम भी ज़मीन से उठा रहेगा, तो नमाज़ सही न होगी।



# ईमान नामा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ईमानः कलमा-ए-तय्यबा ज़बान से पढ़ना दिल से उसके मानी सच जानना, ईमान के यही दो फ़र्ज़ हैं।

## कलमा-ए-तय्यब

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط

लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह०

इसके मानी हैं—नहीं है कोई ख़ुदा, सिवा अल्लाह के, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के पैग़म्बर हैं। कलमे में तीन फ़र्ज़ हैं— उम्र में एक बार पढ़ना, सही पढ़ना, कोई पढ़ो बोले, तो जल्दी पढ़ना।

## ईमान की सिफ़तें सात हैं

१. अल्लाह पर ईमान लाना, २. फ़रिश्तों पर, ३. किताबों पर, ४. पैग़म्बरों पर, ५. क़ियामत पर, ६. तक़्दीरे इलाही पर, ७. मर कर उठने पर ईमान लाना।

★

# ईमान की शर्तें सात हैं

१ : इख़्तियार से ईमान लाना, २. ग़ैब पर ईमान लाना, ३. ग़ैब की ख़बर ख़ुदा ही जानता है, यह समझ कर ईमान लाना, ४. हलाल को हलाल जानना, ५. और हराम को हराम, ६. ख़ुदा के ग़ज़ब से डरते रहना, ७. उसके रहम का उम्मीदवार रहना।

# ईमान सलामत रहने की शर्तें चार हैं

१. ईमान पाने से खुश रहना, २. ईमान जाने से डरते रहना, ३. ईमान जाने की चीज़ों से दूर रहना, ४. मुसलमान पर मेहरबान रहना।

# ईमान के हुक्म सात हैं

१. जान से, २. माल से, ३. तक्लीफ़ से, ४.बद–गुमानी से, ५. बुर्दा बनने से, ६. हमेशा दोज़ख़ी होने से अम्न देना, ७. जन्नत को ले जाना।

# ईमान के वाजिब बारह हैं

१. बिदअ़त से परहेज़ करना, २. नेकों की सोहबत में रहना, ३. बुरों से दूर रहना, ४. अपने लोगों को दीन का इल्म सिखाना, ५. सगों से (रिश्तेदारों से) मिलाप रखना, ६. दो मुसलमान लड़ते हों, तो मिला देना, ७. यतीमों को प्यार करना, ८. मिस्कीनों पर रहम करना, ६. प्यासे को पानी पिलाना, १०. रास्ते से कांटे, पत्थर, नापाकी दूर करना, ११. मुर्दे को नह–लाना, १२. बीमार को पूछना।



# इस्लाम

ख़ुदा और रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की फ़रमांबरदारी को कहते हैं।

# इस्लाम के फ़र्ज़ पांच हैं

१. कलमा–ए–शहादत, २. नमाज़ ३. रोज़ा ४. ज़कात ५. हज

# इस्लाम के वाजिब सात हैं

१. वित्र २. फ़ित्रा, ३. क़ुर्बानी, ४. उमरा, ५. माँ–बाप की फ़रमांबरदारी, ६. बीवी को शौहर की फ़रमांबरदारी, ७. बीवी के ख़ान–पान का ख़र्च।

# इस्लाम की सुन्नतें आठ हैं

१. ख़त्ना, २. सरके, ३. नाक के, ४. लब के, ५. बग़ल के, ६. नाफ़ तले के बाल निकालना, ७. नाख़ुन निकालना, ८. दाढ़ी रखना।

# सलातुत्तस्बीह

हज़रत अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि फ़रमाया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जो अदमी चार रकअ़त नमाज़ तस्बीह पढ़े, उसके सब गुनाह, छोटे हों या बड़े, खुले हों या छिपे, जान–बूझ कर किये गए हों या अनजाने में, बख़्शे जाएंगे। तर्कीब यह है कि चार रकअ़त एक सलाम से पढ़े। हर रकअ़त में पचहत्तर बार तस्बीह पढ़े। तस्बीह यह है:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ

सुब्हानल्लाहि, वल् हम्दुलिल्लाहि व ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर०

इस तरह कि पंद्रह बार सूरः फ़ातिहा और सूरः के बाद और दस बार रूकूअ़ में और रूकूअ़ से खड़े होने पर दस बार और दस बार पहले सज्दे में और दस बार दोनों सज्दों के दर्मियान बैठने पर और दस बार दूसरे सज्दे में, और दस बार फ़िर बैठ कर, इसी तरह चारों रक्अ़तों में पढ़े। इस नामज़ को हर रोज़ पढ़ना चाहिए, अगर न हो सके तो हफ़्ते में एक बार जुमअ़े को, अगर न हो सके तो महीने में, अगर महीने में न हो तो साल में, अगर साल में न हो सके तो तमाम उम्र में एक बार पढ़ ले।

## नामज़ कफ़्फ़ारा क़ज़ा-ए-उम्री

नक़ल किया गया है कि नमाज़ जुमअ़े के बाद चार रक्अ़त पढ़े। हर रक्अ़त में सूरः फ़ातिहा के बाद आयतुल कुर्सी एक बार, सूरः कौसर पंद्रह बार और सलाम के बाद दस-दस बार इस्तिग़्फ़ार और दरूद पढ़े। क़ज़ा हुई नामज़ों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा।

## हर घर के लिये ज़रूरी हर व्यक्ति की आवश्यकता
## हमारी हिन्दी पब्लिकेशंस